द्वारा

डॉ आशीष सिसोदिया

बोली के भाषा बनने के कारण

 बोली कभी-कभी भाषा बन जाती है। इसके मुख्यतः निम्नलिखित कारण हैं:

 किसी कारण बोली का महत्त्वपूर्ण हो जाना -जब किसी कारण से बोली महत्त्वपूर्ण हो जाती है तो वह भाषा बन जाती है। इसके पीछे प्रायः धार्मिक या राजनीतिक कारण काम करते हैं। मध्ययुग में धार्मिक कारण (कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा की बोली) से ब्रज ने प्रायः भाषा का पद प्राप्त कर लिया था। उसका प्रयोग उसके अपने क्षेत्र के बाहर अन्य बोलियों के क्षेत्रों में भी किया जाने लगा था। अवधी बोली के पीछे भी धार्मिक कारण था। यह राम के जन्मभूमि अयोध्या की बोली होने से भाषा का महत्त्व प्राप्त कर गई। ये दोनों ही मध्ययुग में साहित्यिक भाषा बन गई।

 राजनीति की प्रधानता के कारण राजनीति के केन्द्र दिल्ली के आसपास की बोली खड़ी बोली भाषा बन गई। राजनीतिक कारणों से ही आज लंदन, पेरिस आदि की बोलियाँ भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गईं।

 अन्य बोलियों का लुप्त हो जाना - एक भाषा की यदि सभी बोलियाँ लुप्त हो जाएँ और केवल एक बची रहे तो वही भाषा का प्रतिनिधित्व करने लगती है, अतः भाषा बन जाती है।

 अन्य बोलियों से दूर हटकर स्वतन्त्र विकसित होना - यदि कोई बोली किसी भाषा की अन्य बोलियों से दूर हटकर विकसित हो जाए तो उसे भी प्रायः भाषा कहने लगते हैं। द्राविड़ परिवार की ’ब्राहुई‘ इसी रूप में भाषा कही जा सकता है। इसका क्षेत्र पाकिस्तान में है।

 बोलियों का ध्वनि तथा व्याकरण आदि की दृष्टि से विकसित होते-होते एक-दूसरे से भिन्न हो जाना - जब एक ही भाषा की बोलियाँ विकसित होते-होते इतनी बदल जाए कि एक का बोलने वाला दूसरे को न समझ सके तो उन्हें स्वतन्त्र रूप से भाषाएँ स्वीकार कर लेते हैं। मूलतः पंजाबी, हिन्दी, बंगाली, मराठी, गुजराती आदि इसी प्रकार अपभ्रंश की बोलियाँ थीं, विकसित होते-होते जब ये एक दूसरे के लिए प्रायः अबोधगम्य हो गईं तो भाषाएँ कहलाने लगीं।